सविनय अवज्ञा आन्दोलन

साइमन कमीशन की असफलता, नेहरू रिपोर्ट को अस्वीकार कियाजाना, कांग्रेस का लाहौर अधिवेशन एवं अधिवेशन मे पारित किये गये पूर्ण स्वराज्य के प्रस्ताव स्वतंत्रता आंदोलन संबंधी घटनाओं का क्रम काफी तेज हो गया। गाँधीजी द्वारा वायसराय के सम्मुख रखे गये 11 सूत्री मांग पत्र पर सरकार ने कोई सकारात्मक रुख नही अपनाया। फलत: 14 फरवरी 1930 को साबरमती मे कांग्रेस की एक बैठक में गाँधीजी के नेतृत्व में सविनय अवज्ञा आन्दोलन चलाने का निश्चय किया गया।

आन्दोलन का कार्यक्रम →

(I) नमक कानून का उल्लंघन कर स्वयं द्वारा नमक बनाया जाये।
(II) सरकारी सेवाओं, अदालतों, शिक्षा केन्द्रों एवं उपाधियों का बहिष्कार किया जाये।
(III) महिलायें स्वयं शराब, अफीम एवं विदेशी कपड़े की दुकानों पर जाकर धरना दें।
(IV) समस्त विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करते हुए उन्हें जलादिया जाये।
(V) कर अदायगी को रोका जाये।

12 मार्च 1930 को गाँधीजी की प्रसिद्ध दांडी मार्च के साथ सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ हुआ। उस दिन 78 चुने हुये अनुयायीयों के साथ गाँधी जी साबरमती आश्रम से चल कर गुजरात के समुद्र तट पर स्थित दांडी गाँव पहुँचे। 6 अप्रैल 1930 को पहुँच कर उन्होंने समुद्र तट पर नमक कानून को तोड़ा। इस प्रकार नमक कानून देश के कई भागों में भी तोड़ा गया। यह इसबात का प्रतीक था कि भारतीय जनता अब ब्रिटिश कानूनों और ब्रिटिश शासन के अन्तर्गत जीने के लिए तैयार नहीं है।

नमक कानून के भंग होने के साथ ही सारे भारत में सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ हो गया। आन्दोलन व्यापक रूप से पूरे भारत में फैल गया। महिलायें पर्दे से बाहर आकर सत्याग्रह में सक्रिय रूप से हिस्सा लिया, विदेशी कपड़ों की अनेक स्थानों पर होलियां जलाई गयी। महिला वर्ग ने शराब की दुकानें पर धरना दिया तथा कृषकों ने कर अदायगी से इंकार कर दिया।

Scanned by TapScanner

सविनय अवज्ञा आन्दोलन की मुख्य विशेषता थी -

बड़े पैमाने पर पहली बार किसी आंदोलन में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी। इसके पूर्व बहुत कम औरतों ने सार्वजनिक किस्म के राजनैतिक प्रदर्शनों में हिस्सा लिया था। चारों तरफ फैली इस असहयोग नीति से ब्रिटिश हुकूमत ~~झल्ला~~ झल्ला गयी। 5 मई 1930 को गाँधीजी को गिरफ्तार कर लिया गया। आन्दोलन की प्रचण्डता का अहसास कर तत्कालीन वायसराय लार्ड इरविन ने गाँधीजी से समझौता करना चाहा।

इरविन ने भारत सचिव के सहयोग से इंग्लैण्ड में 12 सितम्बर, 1930 को ~~प्रथ~~ प्रथम गोलमेज सम्मेलन का आयोजन करने का फैसला किया कांग्रेस ने अपने को इस सम्मेलन से अलग रखने का निर्णय लिया इरविन ने 25 जनवरी 1931 को गाँधीजी को जेल से रिहा कर देश में सौहार्द का वातावरण उत्पन्न करना चाहा। तेज बहादुर सप्रू एवं जयकर के प्रयासों से गाँधी एवं इरविन के मध्य 17 फरवरी 1931 से दिल्ली में वार्ता आरम्भ हुई। 5 मार्च 1931 को अन्तत: एक समझौते पर हस्ताक्षर हुआ इस समझौते को गांधी इरविन समझौता कहा ~~जा~~ जाता है।